बेटी की व्यथा

बेटी ही है, इस धरा का
आरंभ, अस्तित्व और अंत
बेटा गर भाग्य है
तो बेटी सौभाग्य है
बेटा वंश चलाता है
पर बेटी से ही वंश जना जाता है
बेटी ही जननी
वो ही है सृष्टि की सूत्रधार।

परंतु क्यों
समाज में सम्मान नहीं है
परिवार में सम्मान नहीं है
जन्म से पहले मारा जाता है
जन्म लेले तो जीवन भर ताड़ा जाता है
हर मोड़ पर जीवन के
सुनो तुम बेटी हो
हो तो तुम बेटी ही
कह-कह कर नकारा जाता है।

बेटी के अस्तित्व को नकार कर
बेटों को सरांखों पर रखा जाता है
बेटों को दूध-घी में तारा जाता
सुखी रोटी पर भी बेटी को लताड़ा जाता है

पराया धन घर की लाज बोल
घर की चारदीवारी में, समाज से दूर
अंधेरे चुल्हे को थमाया जाता है
बगावत के डर से, बेटी को बचपन से
पढ़ाई-लिखाई से दूर, चुप रहना सिखाया जाता है।

अफ़सोस
कब समझेगा ये समाज
बेटी ही है इसका उद्धार
बेटी आंगन में फैला उजाला है
गहरे अंधेरे में, एक किरण है बेटी
सही जीवन का आवरण है बेटी
कष्ट में भी धैर्य है बेटी
ममता का सम्मान है बेटी
पिता का अभिमान है बेटी।

इसकी व्यथा और वेदना का
अब हो स्थाई उपचार
क्योंकि सिर्फ बेटी है
इस धरा का
आरंभ, अस्तित्व और अंत
आरंभ, अस्तित्व और अंत ।

चन्दा यादव
बी.ए. (ऑनर्स)– राजनीति विज्ञान
शैक्षणिक सत्र : २०११-१४
मैत्रेयी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय।